माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का माधव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय के स्थापना दिवस समारोह में उदबोधन

स्थान :- भोपाल, दिनांक :- 27 अप्रैल, 2014 समय :- प्रात: 11:00 बजे

माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान के 30 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित समारोह में भाग लेते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर सम्मानित होने वाले पत्रकारों को मैं बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रहालय वास्तव में अन्य संग्रहालयों से अलग और महत्वपूर्ण है।

यह संग्रहालय लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के एतिहासिक पहलुओं की हमें पहचान कराता है साथ ही युवाओं के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणास्त्रोत है। यह देश की विविधता में एकता की पहचान को युवाओं और आने वाली पीढ़ियों तक पहुचने का कार्य कर रहा है। यह देश की संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं को दर्शाने और महापुरूषों के आदर्शों और सिद्धांतों को सजोये रखने का अनूठा संस्थान है। इसमें देश की सभी भाषाओं के समाचार-पत्र और पत्रिकाओं का संग्रह इस बात का साक्षी है कि हमारे देश में लोकतंत्र की जड़ें कितनी मजबूत हैं।

यह शोध संस्थान राष्ट्रीय बौद्धिक धरोहर के संग्रहण और संरक्षण का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहा है। दो शताब्दी पुराने समाचारपत्रों- पत्रिकाओं, संदर्भ-ग्रंथों और अन्य दस्तावेजों के रूप में सप्रे संग्रहालय ने पचास लाख पृष्ठ से अधिक संदर्भ सामग्री संजोयी है। पूरे देश के शोध छात्र अपनी थीसिस (शोध प्रबंध) लिखने के लिए इस दुर्लभ शब्द संपदा का लाभ उठा रहे हैं।

इस संस्थान की प्रतिष्ठा और ऐतिहासिक गौरव का पता इस बात से चलता है कि सप्रे संग्रहालय कर्मयोगी पंडित माधवराव सप्रे की स्मृति को समर्पित है। सप्रे जो हिंदी भाषा और पत्रकारिता के उन्नयन, स्वतंत्रता संग्राम और उसके लिए राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं की तैयारी, लोकमान्य तिलक के "गीता रहस्य" और समर्थ स्वामी रामदास के "दासबोध" का हिन्दी अनुवाद जैसे यशस्वी कार्यों के कर्ता रहे हैं। सप्रे संग्रहालय की विकास यात्रा का बखूबी चित्रण यहां लगी

प्रदर्शनी करती है। प्रदर्शनी पुराने समय के पत्र-पत्रिकाओं की इबारत में भारत का स्वतंत्रता-संग्राम, समाज सुधार के आंदोलन, स्वदेशी आर्थिक आंदोलन इत्यादि की समूची गाथा सुरक्षित है। भारत की महान विभूतियों के व्यक्तित्व और कृतित्व का अभिज्ञान पूरी प्रामाणिकता और जीवंतता के साथ यहां होता है। यह संस्थान एतिहासिक दुलर्भ दस्तावेज के संग्रह का भंडार है।

भारतीय पत्रकारिता का अतीत बहुत गौरवशाली रहा है, हमारी आजादी की लड़ाई में तमाम नायक पत्रकारिता से जुड़े थे। उन्होंने पत्रकारिता की शक्ति को पहचानकर ही उसे समाज सुधार और देश सेवा का माध्यम बनाया। स्वतंत्रता पूर्व की पत्रकारिता सामाजिक सरोकारों से जुड़ी थी इसलिए हमें आजादी पाने में सहूलियत हुई आजादी की लड़ाई में महात्मा गांधी ने"यंग इंडिया' एवं "हरिजन" निकालकर देशवासियों में स्वाधीनता की चेतना जगाई। पंडित जवाहरलाल नेहरू पत्रकारिता की स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर थे। इसके अतिरिक्त माखनलाल चतुर्वेदी जी और गणेश शंकर विघार्थी जी जैसे जुझारू पत्रकारों की मुझे याद आती है। गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने समाचार पत्र "प्रताप" निकाला था। जनता के सवाल और सत्ता से सार्थक प्रतिरोध करते हुए आजादी के आंदोलन में मीडिया ने अपनी जगह और विश्वसनीयता बनाई थी। हमारी आजादी के आंदोलन के सारे नायक मीडिया की इस ताकत को समझते थे और बालगंगाधर तिलक ने केसरी एवं मराठा पत्र निकाला इसके अतिरिक्त पं. नेहरू, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे राष्ट्रनायकों ने भी अखबार निकाले।

पंडित मदनमोहन मालवीय जी का भी पत्रकारिता जगत में विशेष योगदान रहा है। उन्होंने लम्बे समय तक "हिन्दुस्तान " समाचार पत्र का सम्पादन किया। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने 1912 में "अलहिलाल और बाद में "अल बलघ " नामक साप्ताहिक पत्रिका प्रारम्भ की। 1916 में मौलाना आजाद के गिरफ्तार होने के बाद पत्रिका भी बंद हो गई। आजाद चार वर्ष तक जेल में रहे। इसके अतिरिक्त मौलाना आजाद ने इंडिया विन्स फ्रीडम, आत्मकथा तथा 1899 में मात्र 11 वर्ष की आयु में उन्होंने नैरंगे- आलम का प्रकाशन शुरू किया। 1904 में मौलाना ने अलमिस्बाह नामक एक साप्ताहिक शुरू किया और साथ ही मखजन और अहसनुल अखबार में उनके निबंध प्रकाशित हुए।

1857 के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में शामिल कानपुर के अजीम उल्लाह खान की पत्रकारिता में योगदान और कुर्बानियों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। अजीम

उल्लाह खान द्वारा रचित कौमी तराना बेदार बख्त ने अपने अखबार पयाम-ए-आजादी में छापा। इस तराने को झंडा गीत भी कहा जाता है।

इसके प्रकाशित करने के कारण अंग्रेज सरकार द्वारा उन्हें फांसी की सजा दी गई। इसके अलावा इस प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को पकड़-पकड़ कर मौत के घाट उतार दिया।

उस गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है:-

हम हैं इसके मालिक हिन्दोस्तान हमारा

पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा

ये है हमारी मिलकियत, हिन्दोस्तान हमारा

इसी रूहानियत से रोशन हुआ जग सारा

हिन्दु मुस्लिम सिख, हमारा भाई, भाई प्यारा

ये है आजादी का झंडा, इसे सलाम हमारा

इस के अतिरिक्त सयासत जदीद एवं कौमी आवाज जैसे समाचार पत्र उर्दू में नियमित रूप से प्रकाशित होते थे।

यह अखबार उस दौर की सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों पर बातचीत करते थे और आजादी का सपना लेकर चल रहे थे। आजादी के बाद स्थितियां काफी कुछ बदल गयी हैं। सपने बदल गए हैं, किन्तु आज भी हमें भारत के निर्माण के सपनों के साथ जुड़ना होगा।

पत्रकारिता की सार्थकता इसी में है जब वह समाज का उचित मार्गदर्शन करे। मीडिया में सभी पक्ष आने चाहिए किंतु इसमें किसी खास विचारधारा का आधिपत्य नहीं होना चाहिए।

आज देश और समाज विशेष रूप से युवा पीढ़ी पत्रकारिता विशेष कर मीडिया से बहुत प्रभावित है। जनता का मीडिया और पत्रकारिता पर बहुत विश्वास और आशाएं हैं। इन चुनौतियों पर खरा उतरना बड़ी चुनौती है। सूचना एवं संचार क्रांति के इस युग में संवाद और संचार की ताकत को समझकर उसका सही इस्तेमाल करने की जरूरत है। युवा शक्ति ने ही देश में हर परिवर्तन का

सूत्रपात किया है। इसलिए हम इसकी तरफ उम्मीदों से देखते हैं। युवा पत्रकारों पर देश की निगाहें हैं। किन्तु उन्हें हमारे राष्ट्र प्रेमी, पत्रकारों जिन्होंने राष्ट्र के लिए सर्वस्व बलिदान कर दिया था उनसे प्रेरणा लेना चाहिए।

मैं युवा पत्रकारों से कहना चहता हूं कि आप इस संस्थान का भरपूर लाभ उठायें। इस संस्थान में रखे समाचार पत्रों का अध्ययन कर अपने देश को एक नई सोच और दिशा देने का प्रयास करें। इस समय युवा पत्रकारों पर ही देश की लोकतांत्रिक छवि निर्भर करेगी। देश में लोकतांत्रिक गणतंत्र प्रणाली मजबूत रखने का दायित्व युवा पत्रकारों पर ही है।

मैं नौजवान पत्रकारों से कहना चाहता हूं कि शहीद गणेश शंकर विधार्थी जी, माखनलाल चतुर्वेदी जी और स्व. विचित्र कुमार सिन्हा जैसे पत्रकारों के चिंतन में छिपे मूलमंत्र को समझें और पत्रकारिता को मिशन के रूप में इस्तेमाल करें।

मैं इस अवसर पर शहीद भगत सिंह का भी पुण्य स्मरण करना चाहता हूं। जब उनकी माताश्री ने भगत सिंह जी के सामने शादी करने के बारे में कहा तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और स्कूल से भाग कर श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जी के पास आ गये और उसी समय से पत्रकारिता से भी जुड़ गये।

भगत सिंह ने वहीं से अपने पिता को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने माँ के द्वारा शादी के लिए रखे गये प्रस्ताव के संबंध में कहा कि मैं अपनी शादी के संबंध में माँ को कोई जवाब नहीं दे सका।

आपको याद होगा कि जब मेरा जनेऊ संस्कार हुआ था तब महात्मा जी (पूज्य बापू) ने कहा था कि यह लड़का देश के लिए काम करेगा और मैंने तभी यह निर्णय कर लिया था कि मैं शादी नहीं करूंगा एवं राष्ट्र के लिए जीऊगां और मरूंगा।

मैं चाहूंगा कि देश को आज की स्थिति से उबारने के लिए मीडियाकर्मी और पत्रकार आजादी के पहले वाली पत्रकारिता का अनुसरण करें। पत्रकारों पर नई पीढ़ी के चरित्र निर्माण के साथ-साथ महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और अशफाकउल्ला और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के सपने को पूरा करने की जिम्मेदारी है।

आज पत्रकारों और मीडिया ने जिस तरह से प्रभाव अर्जित किया है, उसमें यह जरूरी है कि हम उसकी क्षमताओं का सही दोहन करें। पत्रकारिता के सरोकारों को व्यापक बनाएं और उसकी प्रस्तुति को ज्यादा जवाबदेह बनाएं।

मैं एक बार पुन: आप सबको बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

जय हिन्द।